एक दिवसीय कार्यशाला

हिन्दी लेखन कौशल: एक संवाद

(अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु)

27 फरवरी 2026

आयोजक

राजभाषा प्रकोष्ठ

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

प्रतिवेदन

माननीय कुलपति प्रो. यशवंत सिंह ठाकुर के मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए 'हिंदी लेखन कौशल : एक संवाद' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 27 फरवरी, 2026 को गौर समिति कक्ष, नवीन प्रशासनिक भवन में किया गया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मध्य राजभाषा हिंदी के प्रभावी प्रयोग को प्रोत्साहित करना, हिंदी लेखन कौशल का विकास करना तथा प्रशासनिक एवं व्यावहारिक लेखन की प्रक्रिया के प्रति उनकी समझ को सुदृढ़ करना था। साथ ही प्रतिभागियों को भाषा के सुसंगत, स्पष्ट और प्रभावी प्रयोग के प्रति जागरूक बनाना तथा उनके व्यक्तित्व विकास में लेखन कौशल की भूमिका को रेखांकित करना भी इस कार्यक्रम का प्रमुख लक्ष्य रहा।

कार्यक्रम के संयोजक तथा विश्वविद्यालय के संयुक्त कुलसचिव एवं राजभाषा अधिकारी श्री संतोष सोहगौरा ने कार्यशाला का विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि वर्तमान प्रतिस्पर्धी और ज्ञान-आधारित युग में प्रभावी लेखन कौशल व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास का एक महत्वपूर्ण आयाम है। भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम ही नहीं, बल्कि व्यक्ति के विचारों, भावनाओं और दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करने का सशक्त उपकरण भी है।

उन्होंने साहित्यिक लेखन एवं प्रशासनिक लेखन के मध्य अंतर को स्पष्ट करते हुए बताया कि साहित्यिक लेखन में लेखक को अपने भावों और कल्पनाओं को व्यक्त करने की अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्रता होती है, जबकि प्रशासनिक लेखन में संक्षिप्तता, औपचारिकता, स्पष्टता तथा तथ्यपरकता का विशेष महत्व होता है। उन्होंने यह भी कहा कि प्रशासनिक कार्यों में प्रभावी लेखन से कार्यप्रणाली में पारदर्शिता और दक्षता आती है।

उन्होंने हिंदी भाषा की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि हिंदी का व्यवस्थित व्याकरण, सरल संरचना तथा समृद्ध शब्द-संसार इसे अभिव्यक्ति का अत्यंत प्रभावी और व्यापक माध्यम बनाते हैं। हिंदी में भारत की अनेक भाषाओं के शब्दों का समावेश होने के कारण इसकी अभिव्यक्ति क्षमता अत्यंत व्यापक है। उन्होंने यह भी कहा कि इस प्रकार की कार्यशालाएँ प्रतिभागियों में आत्मविश्वास का विकास करती हैं तथा उन्हें प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के प्रभावी प्रयोग के लिए प्रेरित करती हैं।

कार्यक्रम में विषय-विशेषज्ञ के रूप में डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के पूर्व अधिष्ठाता एवं हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी उपस्थित रहे। अपने व्याख्यान में उन्होंने हिंदी लेखन की संरचना, विचारों की तार्किक अभिव्यक्ति, भाषा की शुद्धता तथा सृजनात्मकता के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि लेखन केवल शब्दों का संयोजन नहीं है, बल्कि विचार, संवेदना और अनुभव की सार्थक अभिव्यक्ति है। प्रभावी लेखन व्यक्ति के बौद्धिक स्तर को परिष्कृत करता है तथा उसके व्यक्तित्व को सुदृढ़ बनाता है।

उन्होंने उदाहरणों, संदर्भों तथा संवादात्मक शैली के माध्यम से प्रतिभागियों को यह समझाया कि नियमित अध्ययन, चिंतन तथा सतत अभ्यास से भाषा पर बेहतर अधिकार प्राप्त किया जा सकता है। उनके अनुसार समृद्ध शब्दावली, स्पष्ट विचार-प्रवाह, तार्किक संरचना तथा व्याकरणिक शुद्धता प्रभावी लेखन की आधारशिला हैं। उन्होंने यह भी कहा कि लेखन प्रक्रिया में अनुशासन, संवेदनशीलता और सामाजिक सरोकारों की समझ अत्यंत आवश्यक होती है, क्योंकि लेखन समाज और व्यक्ति के बीच संवाद स्थापित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

कार्यशाला में विश्वविद्यालय के 50 से अधिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सक्रिय सहभागिता की। कार्यक्रम में सहायक कुलसचिव श्री राजकुमार पाल, श्रीमती ए. लक्ष्मी, श्रीमती ममता त्रिपाठी, सूचना विज्ञानी श्री दयानंदप्पा कोरी, अनुभाग अधिकारी श्री रोहित रघुवंशी सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों ने हिंदी लेखन से संबंधित अपनी जिज्ञासाएँ प्रस्तुत कीं तथा अपने अनुभव साझा किए। संवादात्मक वातावरण के कारण कार्यशाला अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक एवं सहभागितापूर्ण बन गई। प्रतिभागियों ने इस कार्यशाला को प्रेरणादायक तथा व्यावहारिक दृष्टि से अत्यंत उपयोगी बताया।

कार्यक्रम के अंत में राजभाषा प्रकोष्ठ के उच्च श्रेणी लिपिक श्री विनोद रजक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का संचालन हिंदी अनुवादक श्री अभिषेक सक्सेना ने किया तथा आयोजन में श्री राजेश सोनी एवं श्री संतोष लोढ़कर का विशेष सहयोग रहा।

समग्रतः यह कार्यशाला विश्वविद्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रभावी प्रयोग को प्रोत्साहित करने, प्रशासनिक लेखन की गुणवत्ता को सुदृढ़ करने तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी लेखन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण एवं सार्थक पहल सिद्ध हुई।

फोटो गैलरी

एक दिवसीय कार्यशाला
हिन्दी लेखन कौशल : एक संवाद
(अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु)
मध्यान्ह 12.00 बजे
गौर समिति कक्ष
नवीन प्रशासनिक भवन
27 फरवरी 2026
आयोजक
राजभाषा प्रकोष्ठ
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

एक दिवसीय कार्यशाला
हिन्दी लेखन कौशल : एक संवाद
27 फरवरी 2026

एक दिवसीय कार्यशाला
हिन्दी लेखन कौशल : एक संवाद
(अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु)
27 फरवरी 2026
राजभाषा प्रकोष्ठ
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

फोटो गैलरी

एक दिवसीय कार्यशाला
हिन्दी लेखन कौशल : एक संवाद
(अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु)
27 फरवरी 2026
मध्यान्ह 12.00 बजे
गौर समिति कक्ष
नवीन प्रशासनिक भवन
संरक्षक
प्रो. यशवंत सिंह ठाकुर
कुलगुरु
मुख्य वक्ता
प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी
पूर्व अधिष्ठाता एवं अध्यक्ष - हिन्दी विभाग
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय
संयोजक
संतोष सोहगौरा
हिन्दी अधिकारी (प्र.) एवं
संयुक्त कुलसचिव
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

समाचार पत्रों की कतरनें

दैनिक भास्कर सागर 01-03-2026

प्रतिस्पर्धी दौर में प्रभावी हिंदी लेखन कौशल और व्यक्तित्व विकास का अहम हिस्सा है : सोहगौरा

कार्यशाला : भाषा की शुद्धता, तार्किक अभिव्यक्ति और सृजनात्मकता पर दिया जोर

भास्कर संवाददाता | सागर

गौर समिति कक्ष, नवीन प्रशासनिक भवन में विश्वविद्यालय के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा 'हिंदी लेखन कौशल एक संवाद' विषय पर एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम कुलपति प्रो. यशवंत सिंह ठाकुर के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। कार्यशाला का उद्देश्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति ज्ञान-विस्तार, भाषा-संवर्धन और व्यावहारिक लेखन कौशल को विकसित करना रहा।

मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के पूर्व अधिष्ठाता एवं हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी उपस्थित रहे। उन्होंने हिंदी लेखन की संरचना, तार्किक अभिव्यक्ति, भाषा की शुद्धता और सृजनात्मकता पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि लेखन केवल शब्दों का संयोजन नहीं, बल्कि विचार और संवेदना की अभिव्यक्ति है। नियमित अध्ययन, चिंतन और अभ्यास से भाषा पर अधिकार पाया जा सकता है। समृद्ध शब्दावली और व्याकरणिक शुद्धता प्रभावी लेखन की आधारशिला हैं।

कार्यक्रम के संयोजक एवं संयुक्त कुलसचिव तथा राजभाषा अधिकारी संतोष सोहगौरा ने कहा कि प्रतिस्पर्धी दौर में प्रभावी लेखन कौशल व्यक्तित्व विकास का अहम हिस्सा है। उन्होंने साहित्यिक और प्रशासनिक लेखन के अंतर को स्पष्ट करते हुए बताया कि प्रशासनिक लेखन में संक्षिप्तता, स्पष्टता और औपचारिकता अनिवार्य है।

कार्यशाला में 50 से अधिक अधिकारियों व कर्मचारियों ने सहभागिता की। प्रतिभागियों ने प्रश्नोत्तर सत्र में सक्रिय भागीदारी कर अपने अनुभव साझा किए। अंत में उच्च श्रेणी लिपिक विनोद रजक ने धन्यवाद ज्ञापित किया। संचालन हिंदी अनुवादक अभिषेक सक्सेना ने किया। विशेष सहयोग राजेश सोनी और संतोष लोढ़कर का रहा।

आचरण 01-03-2026

विश्वविद्यालय में 'हिंदी लेखन कौशल : एक संवाद' विषय पर राजभाषा कार्यशाला सम्पन्न

आचरण संवाददाता

सागर। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. यशवंत सिंह ठाकुर के मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा विश्वविद्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु आयोजित 'हिंदी लेखन कौशल : एक संवाद' विषयक एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुई। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों के राजभाषा हिंदी के प्रति ज्ञान-विस्तार, व्यक्तित्व विकास, भाषा-संवर्धन तथा व्यावहारिक अनुभव को समृद्ध करना रहा। कार्यक्रम में विषय-विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के पूर्व अधिष्ठाता एवं हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने अपने व्याख्यान में हिंदी लेखन की संरचना, विचारों की तार्किक अभिव्यक्ति, भाषा की शुद्धता एवं सृजनात्मकता के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हिंदी लेखन केवल शब्दों का संयोजन नहीं, बल्कि विचार, संवेदना और अनुभव की अभिव्यक्ति है। प्रभावी लेखन व्यक्ति के बौद्धिक स्तर को परिष्कृत करता है तथा उसके व्यक्तित्व को सशक्त बनाता है। उन्होंने उदाहरणों, संदर्भों और संवादात्मक पद्धति के माध्यम से बताया कि किस प्रकार नियमित अध्ययन, चिंतन और अभ्यास से भाषा पर अधिकार प्राप्त किया जा सकता है। उनके अनुसार, समृद्ध शब्दावली, स्पष्ट विचार-प्रवाह और व्याकरणिक शुद्धता लेखन की आधारशिला हैं। लेखन प्रक्रिया में अनुशासन, संवेदनशीलता और सामाजिक सरोकार भी उतने ही आवश्यक हैं।

कार्यशाला का विषय प्रवर्तन करते हुए कार्यक्रम के संयोजक तथा विश्वविद्यालय के संयुक्त कुलसचिव एवं राजभाषा अधिकारी संतोष सोहगौरा ने कहा कि वर्तमान प्रतिस्पर्धी युग में प्रभावी लेखन कौशल व्यक्तित्व विकास का महत्वपूर्ण अंग है। भाषा व्यक्ति की पहचान और अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। उन्होंने बताया कि साहित्यिक लेखन एवं प्रशासनिक लेखन दोनों में बहुत अंतर होता है। एक ओर जहां साहित्यिक लेखन में लेखक अपने मनोभावों को व्यक्त करने हेतु पूर्ण स्वतंत्र होता है वहीं दूसरी ओर प्रशासनिक लेखन में संक्षिप्तता, औपचारिकता एवं स्पष्टता होना आवश्यक होता है। हिन्दी भाषा की खूबियों पर बात करते हुए उन्होंने बताया कि हिन्दी का व्यवस्थित व्याकरण एवं समृद्ध शब्द संसार है जिसमें भारत की समस्त भाषाओं के शब्द समाहित हैं। उन्होंने बताया कि इस प्रकार की कार्यशालाएँ प्रतिभागियों और युवा प्रतिभाओं को आत्मविश्वास प्रदान करती हैं तथा उनके अनुभव को व्यावहारिक दिशा देती हैं। उक्त कार्यशाला में 50 से अधिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सक्रिय सहभागिता की। कार्यशाला में सहायक कुलसचिव राजकुमार पाल, श्रीमती ए.लक्ष्मी, श्रीमती ममता त्रिपाठी, सूचना विज्ञानी दयानंदप्पा कोरी, अनुभाग अधिकारी रोहित रघुवंशी सहित विभिन्न विभागों में कार्यरत अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे। इस दौरान प्रतिभागियों ने भी लेखन संबंधी जिज्ञासाएँ प्रस्तुत कीं तथा अपने अनुभव साझा किए। इस संवादात्मक वातावरण ने सीखने की प्रक्रिया को और अधिक जीवंत एवं सार्थक बनाया। प्रतिभागियों ने इसे ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक एवं व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी बताया। यह कार्यशाला हिंदी भाषा के प्रति नवचेतना एवं रचनात्मक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक सार्थक प्रयास सिद्ध हुई। अंत में राजभाषा प्रकोष्ठ के उच्च श्रेणी लिपिक विनोद रजक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का समापन हुआ। संचालन हिन्दी अनुवादक अभिषेक सक्सेना ने किया। विशेष सहयोग राजेश सोनी एवं संतोष लोढ़कर का रहा।

देशबंधु 01-03-2026

लेखन कौशल व्यक्ति की आत्म अभिव्यक्ति की क्षमता का द्योतक है: संतोष सोहगौरा

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि के कुलपति प्रो. यशवंत सिंह ठाकुर के मार्गदर्शन में विवि के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा विश्वविद्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु आयोजित हिंदी लेखन कौशल: एक संवाद विषयक एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों के राजभाषा हिंदी के प्रति ज्ञान विस्तार, व्यक्तित्व विकास, भाषा संवर्धन तथा व्यावहारिक अनुभव को समृद्ध करना रहा। कार्यक्रम में विषय विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित डॉ. हरीसिंह गौर विवि के पूर्व अधिष्ठाता एवं हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने अपने व्याख्यान में हिंदी लेखन की संरचना, विचारों की तार्किक अभिव्यक्ति, भाषा की शुद्धता एवं सृजनात्मकता के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हिंदी लेखन केवल शब्दों का संयोजन नहीं, बल्कि विचार, संवेदना और अनुभव की अभिव्यक्ति है। प्रभावी लेखन व्यक्ति के बौद्धिक स्तर को परिष्कृत करता है तथा उसके व्यक्तित्व को सशक्त बनाता है। लेखन प्रक्रिया में अनुशासन, संवेदनशीलता और सामाजिक सरोकार आवश्यक हैं। कार्यशाला का विषय प्रवर्तन करते हुये कार्यक्रम के संयोजक तथा विवि के संयुक्त कुलसचिव एवं राजभाषा अधिकारी संतोष सोहगौरा ने कहा कि वर्तमान प्रतिस्पर्धी युग में प्रभावी लेखन कौशल व्यक्तित्व विकास का महत्वपूर्ण अंग है। भाषा व्यक्ति की पहचान और अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। उन्होंने बताया कि साहित्यिक लेखन एवं प्रशासनिक लेखन दोनों में बहुत अंतर होता है। एक ओर जहां साहित्यिक लेखन में लेखक अपने मनोभावों को व्यक्त करने हेतु पूर्ण स्वतंत्र होता है वहीं दूसरी ओर प्रशासनिक लेखन में संक्षिप्तता, औपचारिकता एवं स्पष्टता होना आवश्यक होता है। हिन्दी भाषा की खूबियों पर बात करते हुये उन्होंने बताया कि हिन्दी का व्यवस्थित व्याकरण एवं समृद्ध शब्द संसार है जिसमें भारत की समस्त भाषाओं के शब्द समाहित हैं। इस प्रकार की कार्यशालायें प्रतिभागियों और युवा प्रतिभाओं को आत्मविश्वास प्रदान करती हैं तथा उनके अनुभव को व्यावहारिक दिशा देती हैं। कार्यशाला में सहा. कुलसचिव राजकुमार पाल, लक्ष्मी, ममता त्रिपाठी, दयानंदप्पा कोरी, रोहित रघुवंशी सहित विभिन्न विभागों में कार्यरत अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। अंत में राजभाषा प्रकोष्ठ के उच्च श्रेणी लिपिक विनोद रजक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का समापन हुआ। संचालन हिन्दी अनुवादक अभिषेक सक्सेना ने किया। विशेष सहयोग राजेश सोनी एवं संतोष लोढ़कर का रहा।

पत्रिका 01-03-2026

'हिंदी लेखन कौशल एक संवाद' विषय पर कार्यशाला...

हिंदी लेखन केवल शब्दों का संयोजन नहीं, बल्कि विचार, संवेदना की अभिव्यक्ति है: डॉ. आनंद त्रिपाठी

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के राजभाषा प्रकोष्ठ ने विश्वविद्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए हिंदी लेखन कौशल विषय पर कार्यशाला की। मुख्यअतिथि हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि हिंदी लेखन केवल शब्दों का संयोजन नहीं, बल्कि विचार, संवेदना और अनुभव की अभिव्यक्ति है। प्रभावी लेखन व्यक्ति के बौद्धिक स्तर को परिष्कृत करता है तथा उसके व्यक्तित्व को सशक्त बनाता है।

उन्होंने उदाहरणों, संदर्भों और संवादात्मक पद्धति के माध्यम से बताया कि किस प्रकार नियमित अध्ययन, चिंतन और अभ्यास से भाषा पर अधिकार प्राप्त किया जा सकता है। समृद्ध शब्दावली, स्पष्ट विचार-प्रवाह और व्याकरण शुद्धता लेखन की आधारशिला हैं। संयोजक राजभाषा अधिकारी संतोष सोहगौरा ने कहा कि वर्तमान प्रतिस्पर्धी युग में प्रभावी लेखन कौशल व्यक्तित्व विकास का महत्वपूर्ण अंग है। भाषा व्यक्ति की पहचान और अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। उन्होंने बताया कि साहित्यिक लेखन एवं प्रशासनिक लेखन दोनों में बहुत अंतर होता है। एक ओर जहां साहित्यिक लेखन में लेखक अपने मनोभावों को व्यक्त करने हेतु पूर्ण स्वतंत्र होता है वहीं दूसरी ओर प्रशासनिक लेखन में संक्षिप्तता, औपचारिकता एवं स्पष्टता होना आवश्यक होता है। संचालन हिंदी अनुवादक अभिषेक सक्सेना ने किया। विशेष सहयोग राजेश सोनी व संतोष लोढ़कर का रहा। आभार विनोद रजक ने माना।

नवदुनिया 01-03-2026

लेखन का अभ्यास व्यक्ति के बौद्धिक स्तर को परिष्कृत करता है : प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी

विश्वविद्यालय में 'हिंदी लेखन कौशल एक संवाद' विषय पर राजभाषा कार्यशाला सम्पन्न

विश्वविद्यालय में कार्यशाला का आयोजन किया गया। • नवदुनिया

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागर: डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा कुलपति प्रो. यशवंत सिंह ठाकुर के मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए आयोजित हिंदी लेखन कौशल एक संवाद विषय पर कार्यशाला हुई। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों के राजभाषा हिंदी के प्रति ज्ञान-विस्तार, व्यक्तित्व विकास, भाषा-संवर्धन तथा व्यावहारिक अनुभव को समृद्ध करना रहा।

कार्यक्रम में हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि हिंदी लेखन केवल शब्दों का संयोजन नहीं, बल्कि विचार, संवेदना और अनुभव की अभिव्यक्ति है।

प्रभावी लेखन व्यक्ति के बौद्धिक स्तर को परिष्कृत करता है तथा उसके व्यक्तित्व को सशक्त बनाता है। उन्होंने उदाहरणों, संदर्भों और संवादात्मक पद्धति के माध्यम से बताया कि किस प्रकार नियमित अध्ययन, चिंतन और अभ्यास से भाषा पर अधिकार प्राप्त किया जा सकता है। उनके अनुसार, समृद्ध शब्दावली, स्पष्ट विचार-प्रवाह और व्याकरणिक शुद्धता लेखन की आधारशिला हैं। लेखन प्रक्रिया में अनुशासन, संवेदनशीलता और सामाजिक सरोकार भी उतने ही आवश्यक हैं।

कार्यशाला में राजभाषा अधिकारी संतोष सोहगौरा ने कहा कि वर्तमान प्रतिस्पर्धी युग में प्रभावी लेखन कौशल व्यक्तित्व विकास का महत्वपूर्ण अंग है। भाषा व्यक्ति की पहचान और अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। उन्होंने बताया कि साहित्यिक लेखन एवं प्रशासनिक लेखन दोनों में बहुत अंतर होता है। एक ओर जहां साहित्यिक लेखन में लेखक अपने मनोभावों को व्यक्त करने हेतु पूर्ण स्वतंत्र होता है वहीं दूसरी ओर प्रशासनिक लेखन में संक्षिप्तता, औपचारिकता एवं स्पष्टता होना आवश्यक होता है। कार्यशाला में 50 से अधिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सक्रिय सहभागिता की।

कार्यशाला में सहायक कुलसचिव राजकुमार पाल, ए लक्ष्मी, ममता त्रिपाठी, सूचना विज्ञानी दयानंदप्पा कोरी, अनुभाग अधिकारी रोहित रघुवंशी सहित कई कर्मचारी उपस्थित रहे। इस दौरान प्रतिभागियों ने भी लेखन संबंधी जिज्ञासाएं प्रस्तुत कीं तथा अपने अनुभव साझा किए। राजभाषा प्रकोष्ठ के उच्च श्रेणी लिपिक विनोद रजक द्वारा आभार माना। संचालन हिन्दी अनुवादक अभिषेक सक्सेना ने किया।

एसबीन्यूज 01-03-2026

विश्वविद्यालय में 'हिंदी लेखन कौशल : एक संवाद' विषय पर राजभाषा कार्यशाला सम्पन्न

लेखन का अभ्यास व्यक्ति के बौद्धिक स्त:र को परिष्कृ त करता है : प्रो.त्रिपाठी

लेखन कौशल व्यक्ति की आत्म-अभिव्यिक्त की क्षमता का द्योतक है : संतोष सोहगौरा

सागर(एसबीन्यूज)। डॉक्टकर हरीसिंह गौर विश्वकविद्यालय के राजभाषा प्रकोष्ठत द्वारा कुलपति प्रो. यशवंत सिंह ठाकुर के मार्गदर्शन में विश्व विद्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु आयोजित 'हिंदी लेखन कौशल : एक संवाद' विषयक एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुई। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों के राजभाषा हिंदी के प्रति ज्ञान-विस्तार, व्यक्तित्व विकास, भाषा-संवर्धन तथा व्यावहारिक अनुभव को समृद्ध करना रहा। कार्यक्रम में विषय-विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित डॉक्टकर हरीसिंह गौर विश्वजविद्यालय, सागर के पूर्व अधिष्ठा्ता एवं हिन्दीं विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने अपने व्याख्यान में हिंदी लेखन की संरचना, विचारों की तार्किक अभिव्यक्ति, भाषा की शुद्धता एवं सृजनात्मकता के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हिंदी लेखन केवल शब्दों का संयोजन नहीं, बल्कि विचार, संवेदना और अनुभव की अभिव्यक्ति है। प्रभावी लेखन व्यक्ति के बौद्धिक स्तर को परिष्कृत करता है तथा उसके व्यक्तित्व को सशक्त बनाता है। उन्होंने उदाहरणों, संदर्भों और संवादात्मक पद्धति के माध्यम से बताया कि किस प्रकार नियमित अध्ययन, चिंतन और अभ्यास से भाषा पर अधिकार प्राप्त किया जा सकता है। उनके अनुसार, समृद्ध शब्दावली, स्पष्ट विचार-प्रवाह और व्याकरणिक शुद्धता लेखन की आधारशिला हैं। लेखन प्रक्रिया में अनुशासन, संवेदनशीलता और सामाजिक सरोकार भी उतने ही आवश्यक हैं। कार्यशाला का विषय प्रवर्तन करते हूए कार्यक्रम के संयोजक तथा विश्व विद्यालय के संयुक्त कुलसचिव एवं राजभाषा अधिकारी संतोष सोहगौरा ने कहा कि वर्तमान प्रतिस्पर्धी युग में प्रभावी लेखन कौशल व्यक्तित्व विकास का महत्वपूर्ण अंग है। भाषा व्यक्ति की पहचान और अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। उन्होंने बताया कि साहित्यिक लेखन एवं प्रशासनिक लेखन दोनों में बहुत अंतर होता है। एक ओर जहां साहित्यिक लेखन में लेखक अपने मनोभावों को व्यसक्ते करने हेतु पूर्ण स्वनतंत्र होता है वहीं दूसरी ओर प्रशासनिक लेखन में संक्षिप्तअता, औपचारिकता एवं स्पष्टता होना आवश्य क होता है। हिन्दीउ भाषा की खूबियों पर बात करते हुए उन्होंओने बताया कि हिन्दी का व्यंवस्थित व्याकरण एवं समृद्ध शब्दत संसार है जिसमें भारत की समस्तख भाषाओं के शब्दउ समाहित हैं।

उन्होंने बताया कि इस प्रकार की कार्यशालाएँ प्रतिभागियों और युवा प्रतिभाओं को आत्मविश्वास प्रदान करती हैं तथा उनके अनुभव को व्यावहारिक दिशा देती हैं। उक्तव कार्यशाला में 50 से अधिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सक्रिय सहभागिता की। कार्यशाला में सहायक कुलसचिव श्री राजकुमार पाल, श्रीमती ए.लक्ष्मी , श्रीमती ममता त्रिपाठी, सूचना विज्ञानी दयानंदप्पार कोरी, अनुभाग अधिकारी रोहित रघुवंशी सहित विभिन्नं विभागों में कार्यरत अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे। इस दौरान प्रतिभागियों ने भी लेखन संबंधी जिज्ञासाएँ प्रस्तुत कीं तथा अपने अनुभव साझा किए। इस संवादात्मक वातावरण ने सीखने की प्रक्रिया को और अधिक जीवंत एवं सार्थक बनाया। प्रतिभागियों ने इसे ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक एवं व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी बताया। यह कार्यशाला हिंदी भाषा के प्रति नवचेतना एवं रचनात्मक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक सार्थक प्रयास सिद्ध हुई। अंत में राजभाषा प्रकोष्ठध के उच्चप श्रेणी लिपिक विनोद रजक द्वारा धन्यहवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का समापन हुआ। संचालन हिन्दीष अनुवादक अभिषेक सक्सेरना ने किया। विशेष सहयोग राजेश सोनी एवं संतोष लोढ़कर का रहा।

हिंदी लेखन कौशल एक संवाद विषय पर राजभाषा कार्यशाला सम्पन्न

Journalist Sharad shtivastav February 27, 2026

सागर।विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. यशवंत सिंह ठाकुर के मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा विश्वविद्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु आयोजित हिंदी लेखन कौशल एक संवाद विषयक एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुई कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों के राजभाषा हिंदी के प्रति ज्ञान-विस्तार, व्यक्तित्व विकास,भाषा संवर्धन तथा व्यावहारिक अनुभव को समृद्ध करना रहा कार्यक्रम में विषय विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के पूर्व अधिष्ठाता एवं हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो.आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने अपने व्याख्यान में हिंदी लेखन की संरचना विचारों की तार्किक अभिव्यक्ति,भाषा की शुद्धता एवं सृजनात्मकता के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला उन्होंने कहा कि हिंदी लेखन केवल शब्दों का संयोजन नहीं, बल्कि विचार, संवेदना और अनुभव की अभिव्यक्ति है प्रभावी लेखन व्यक्ति के बौद्धिक स्तर को परिष्कृत करता है तथा उसके व्यक्तित्व को सशक्त बनाता है उन्होंने उदाहरणों, संदर्भों और संवादात्मक पद्धति के माध्यम से बताया कि किस प्रकार नियमित अध्ययन, चिंतन और अभ्यास से भाषा पर अधिकार प्राप्त किया जा सकता है उनके अनुसार,समृद्ध शब्दावली, स्पष्ट विचार-प्रवाह और व्याकरणिक शुद्धता लेखन की आधारशिला हैं लेखन प्रक्रिया में अनुशासन, संवेदनशीलता और सामाजिक सरोकार भी उतने ही आवश्यक हैं

कार्यशाला में 50 से अधिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सक्रिय सहभागिता की कार्यशाला में सहायक कुलसचिव राजकुमार पाल, श्रीमती ए.लक्ष्मी, श्रीमती ममता त्रिपाठी, सूचना विज्ञानी दयानंदप्पा कोरी, अनुभाग अधिकारी रोहित रघुवंशी सहित विभिन्न विभागों में कार्यरत अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे अंत में राजभाषा प्रकोष्ठ के उच्च श्रेणी लिपिक विनोद रजक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का समापन हुआ संचालन हिन्दी अनुवादक अभिषेक सक्सेना ने किया विशेष सहयोग राजेश सोनी एवं संतोष लोढ़कर का रहा।

सागर

विश्वविद्यालय में 'हिंदी लेखन कौशल : एक संवाद' विषय पर राजभाषा कार्यशाला सम्पन्न

सागर। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. यशवंत सिंह ठाकुर के मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा विश्वविद्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु आयोजित 'हिंदी लेखन कौशल : एक संवाद' विषयक एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुई। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों के राजभाषा हिंदी के प्रति ज्ञान-विस्तार, व्यक्तित्व विकास, भाषा-संवर्धन तथा व्यावहारिक अनुभव को समृद्ध करना रहा।

कार्यक्रम में विषय-विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के पूर्व अधिष्ठाता एवं हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने अपने व्याख्यान में हिंदी लेखन की संरचना, विचारों की तार्किक अभिव्यक्ति, भाषा की शुद्धता एवं सृजनात्मकता के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला।

कार्यशाला का विषय प्रवर्तन करते हूए कार्यक्रम के संयोजक तथा विश्वविद्यालय के संयुक्त कुलसचिव एवं राजभाषा अधिकारी संतोष सोहगौरा ने कहा कि वर्तमान प्रतिस्पर्धी युग में प्रभावी लेखन कौशल व्यक्तित्व विकास का महत्वपूर्ण अंग है। भाषा व्यक्ति की पहचान और अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है।
उक्त कार्यशाला में 50 से अधिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सक्रिय सहभागिता की। कार्यशाला में सहायक कुलसचिव राजकुमार पाल, ए.लक्ष्मी, ममता त्रिपाठी, सूचना विज्ञानी दयानंदप्पा कोरी, अनुभाग अधिकारी रोहित रघुवंशी सहित विभिन्न विभागों में कार्यरत अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे। इस दौरान प्रतिभागियों ने भी लेखन संबंधी जिज्ञासाएँ प्रस्तुत कीं तथा अपने अनुभव साझा किए। इस संवादात्मक वातावरण ने सीखने की प्रक्रिया को और अधिक जीवंत एवं सार्थक बनाया। प्रतिभागियों ने इसे ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक एवं व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी बताया। यह कार्यशाला हिंदी भाषा के प्रति नवचेतना एवं रचनात्मक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक सार्थक प्रयास सिद्ध हुई। अंत में राजभाषा प्रकोष्ठ के उच्च श्रेणी लिपिक विनोद रजक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का समापन हुआ। संचालन हिन्दी अनुवादक अभिषेक सक्सेना ने किया। विशेष सहयोग राजेश सोनी एवं संतोष लोढ़कर का रहा।

राजभाषा प्रकोष्ठ
HINDI CELL
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
DOCTOR HARISINGH GOUR VISHWAVIDYALAYA, SAGAR (M.P.)

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय A CENTRAL UNIVERSITY)

ई–मेल :rajbhasha@dhsgsu.edu.in
दूरभाष क्र. : (07582) 297118

पत्र क्र. राभाप्र/2026/33/5013 — 23 फरवरी, 2026

सूचना

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रमानुसार प्रशासनिक काम–काज में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राजभाषा प्रकोष्ठ नियमित रूप से कर्मचारियों हेतु कार्यशालाओं का आयोजन करता है।

इसी क्रम में सक्षम प्राधिकारी की अनुमति से विश्वविद्यालय में समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु **'हिन्दी लेखन कौशल : एक संवाद'** विषय पर एक दिवसीय **हिन्दी कार्यशाला दिनांक 27 फरवरी, 2026 (शुक्रवार) को मध्याह्न 12.00 बजे** गौर समिति कक्ष, नवीन प्रशासनिक भवन में आयोजित की जा रही है। उक्त कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ के रूप में **प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी, पूर्व अधिष्ठाता एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर** उपस्थित रहेंगे।

अतः उक्त कार्यशाला में समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति अपेक्षित है।

आदेशानुसार

संतोष सोहगौरा
राजभाषा अधिकारी (प्र.) एवं
संयुक्त कुलसचिव

प्रतिलिपि : कृपया सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु।

1. सर्वसंबंधित अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण।
2. समस्त विभागाध्यक्ष, निदेशकगण, प्रभारी अधिकारीगण एवं शाखा प्रभारी – उक्त कार्यशाला में अपने अधीनस्थ पदस्थ समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों की प्रतिभागिता सुनिश्चित करवाने के अनुरोध के साथ।
3. प्रभारी, सूचना प्रौद्योगिकी प्रकोष्ठ–वेबसाइट पर अपलोड करने के अनुरोध के साथ।
4. कुलपति जी के निजी सहायक– माननीय कुलपति जी को सादर सूचनार्थ।
5. कुलसचिव जी के निज सहायक।
6. कार्यालय नस्ती।

राजभाषा प्रकोष्ठ
HINDI CELL
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
DOCTOR HARISINGH GOUR VISHWAVIDYALAYA, SAGAR (M.P.)
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय A CENTRAL UNIVERSITY)

ई-मेल :rajbhasha@dhsgsu.edu.in
दूरभाष क्र. : (07582) 297118

पत्र क्र. राभाप्र/2026/33/5012

23 फरवरी, 2026

प्रति,

प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

विषय : हिन्दी कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रण।

महोदय,

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के निर्देशों के तारतम्य में विश्वविद्यालय के प्रशासनिक काम–काज में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राजभाषा प्रकोष्ठ विश्वविद्यालय के समस्त समस्त अधिकारियों एवं लिपिक वर्गीय कर्मचारियों हेतु **'लेखन कौशल : एक संवाद'** विषय पर एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला दिनांक 27 फरवरी, 2026 (शुक्रवार) को मध्याह्न 12.00 बजे गौर समिति कक्ष, नवीन प्रशासनिक भवन में करने जा रहा है।

हिन्दी लेखन में आपके भाषाई ज्ञान एवं रचनात्मकता का लाभ कार्मिकों को प्रदान करने के उद्देश्य से उक्त कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ के रूप में पधारने की कृपा करें।

सहयोग की कामना के साथ,

भवदीय,

23/02/26

(संतोष सोहगौरा)
संयुक्त कुलसचिव एवं
राजभाषा अधिकारी (प्र.)

प्रतिलिपि :

1. कुलपति जी के निजी सहायक– माननीय कुलपति जी को सादर सूचनार्थ।
2. कुलसचिव जी के निज सहायक।
3. गार्ड फाईल।

हिंदी

हिन्दी का सम्मान
देश का सम्मान है।
हमारी स्वतंत्रता वहां है,
हमारी राष्ट्र भाषा जहां है।